'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 4) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

दलित कहानियों में आंबेडकरवादी विचारधारा

शोध निर्देशक -
डॉ.जालिंदर यादवराव इंगले
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगाव कॅम्प जि.नासिक

शोध छात्र -
तायाजी तुकाराम लोंढे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरूर

डा.बाबासाहब आंबेडकर एक ऐसा नाम है जिसने आधुनिक भारत का इतिहास बदल दिया हैं। इस महानायक के विचार इतने प्रासंगिक है कि उसको नकार नही सकतें। ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं हैं जहॉ पर डा. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों कों आधार न माना हो। इंन्सान भले ही मर जाए किंतु उसके विचार कभी मरते नहीं। डा.बाबासाहब आंबेडकर के महानिर्वाण के उपरांत ६२ साल बाद भी उनके विचारों का प्रभाव वढता ही चला जा रहा है। मराठी भाषा के श्रेष्ठ साहित्यकार प्र. के. अत्रे ने अपने दै. मराठा में कहा था कि जिवीत बाबासाहब आंबेडकर से भी खतरनाक म"त बाबासाहब आंबेडकर के विचार होंगे। प्र. के. अत्रे जी की कही बात आज सच होती दिखाई दे रही हैं। डा.बाबासाहब आंबेडकर के विचारों कों आधार मानकर सामाजिक , आर्थिक, धार्मिक, सांस्क"तिक, राजनीतिक क्षेत्र में काफी परिवर्तन आए है। साहित्य का क्षेत्र भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा हैं।

शिक्षित बनों, संगठीत बनो और संघर्ष करो यह नारा डा. बाबासाहब आंबेडकर जी ने दलित लोंगों कों दिया। इससे प्रेरित होकर दलित लोंगों शिक्षा ग्रहण करना आरंभ किया। शिक्षित होने के कारण दलित लोंगों का स्वाभिमान जाग"त हो गया। वे अपने आप को पहचानने लगें, डा. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों पर चलने लगे। रूढी, परंपरा, रिति-रिवाज, गुलामी, जाति प्रथा, ईश्वर इसका विरोध वे करने लगें। अपने उपर होनेवाले अन्याय-अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने लगे, लिखने लगे। यह लेखन साहित्य के क्षेत्र में नया रूप लेकर सामने आया जिसमें दलितों की पीडा थी, दर्द था, व्यवस्था के प्रति नकार था, विद्रोह था, छटपटाहट थी, अपने अस्मिता की पहचान थी। डा. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों की अभिव्यक्ति कहानी, काव्य, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, आलोचना, पत्रकारिता एवं विभिन्न प्रकार के लेखों के माध्यम से होने लगी जो एक साहित्यिक प्रवाह के रूप में बदल गई जिसे दलित साहित्य के नाम से पहचाना गया।

दलित साहित्य के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए डा. गंगाधर पंतावणे लिखते है कि, "दलित साहित्य की प्रेरणा न मार्क्सवाद हैं, न हिंदूवाद न निग्रो साहित्य हैं। दलित साहित्य की प्रेरणा केवल आंबेडारवाद है।"[1]

प्रसिध्द दलित चिंतक कँवल भारती लिखते है कि, "आधुनिक दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह आंबेडारवादी है। सामाजिक , आर्थिक, और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उसके सरोकार है जो अंबेडकर के थे।"[२]

हिंदी के कहानीकारों ने बाबासाहब आंबेडकर के विचारों का प्रचार और प्रसार किया। उन्होंने अपनी कहानियों में स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुता का चित्रण किया। रूढी-परंपरा, रीति-रिवाज, ईश्वरवाद,

Scanned with CamScanner

जातिगत भेदभाव, छूआछूत का विरोध किया। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, सुशिला टाकभौरे, सूरजपाल चौहान, श्यौराजसिंह बेचैन, सत्यप्रकाश, रत्नकुमार सांभरिया, दयानंद बटोही, बुध्द शरणं हंस, प्रल्हादचंद्र दास, रमणिका गुप्ता, कुसुम वियोगी, विपिन बिहारी, शत्रुघ्न कुमार, रजत रानी मीनू आदि जैसे कई कहानाकारों ने बाबासाहब आंबेडकर के विचारों को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति देने का काम किया है। दलित कहानी में बाबासाहब आंबेडकर के विचार ठूस-ठूसकर भरे है और उनको छोडकर दलित कहानी का अपना कोई अस्तित्व नहीं है, कोई अर्थ नहीं है।

बाबासाहब आंबेडकर के विचारों पर चलने से लोगों का भला होता है और हमें भी उनके दिखाये रास्ते पर चलना होगा। इस प्रकार की सोच सूरजपाल चौहान जी की कहानी 'बहुरूपिया' नामक कहानी का पात्र विशाल में दिखाई देती है। विशाल पढा लिखा युवक है। वह जानता है कि समाज का विकास एवं कल्याण बाबासाहब आंबेडकर की शिक्षा से ही हो सकता है। विशाल डा.रामसेवक से कहता है कि, "वाल्मीकि समाज के लोगों में जब तक डा. बाबासाहब आंबेडकर की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार नहीं होगा जब तक इस समाज का कल्याण होनेवाला नही।"[३] विशाल केवल यही कहते हुए रूकता नहीं। १४ अप्रैल के दिन डा. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों का प्रचार और प्रसार करने के लिए वाल्मीकि समाज के लोगों को भाषण देते हुए कहता है कि, "दलित समाज के लोग बाबासाहब डा. आंबेडकर की शिक्षाओं को अपनाकर और पढ आज कहा से कहा पहूच रहे है....आप लोग भी उनके बताए हुए मार्ग पर चलना शुरू कर दो, अपने बच्चों कें हाथ से झाडू छिनकर दूर फेंक दो और कलम थमा दो, देवी देवताओं की पूजा-अर्चना से दूर रहो।"[४]

भारतीय संविधान ने छूआछूत को समाप्त करके सभी लोगों को मूलभूत अधिकार प्रदान किये है। जिसके कारण समाज में समानता स्थापित हो गई। सुशिला टाकभौरे की कहानी 'संघर्ष' में समानता का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक शंकर सवर्ण लडकों के साथ स्कूल में एक ही बैंच पर बैठकर पढ सकता। उसे स्कूल आने से कोई रोक नही सकता। जिस प्रकार से लोग शंकर को घर से भगाते है वैसे कक्षा के अंदर से नही भगा सकते। शंकर ने हेडमास्टर जी को कहते सुनी था कि,"मध्यप्रदेश में और पूरे देश में यह सरकारी नियम बन गया है शंकर को स्कूल से नही भगा सकते। नही तो कानून हमें भगायेगा। शंकर को स्कूल में आने और पढने का अधिकार मिल गया है। डा. आंबेडकर ने देश के संविधान में उन्हे मूलभूत अधिकार दिये है।"[५]

सुशिला जी की कहानी 'जन्मदिन' का नायक मुन्ना डा आंबेडकर के विचारों कों मानने वाला लडका है। मुन्ना सदियों से चली आ रही परंपरा मल मूत्र को टोकने में भरकर उठाना इसको तोड देना चाहता है। साथ ही यह गंदगीवाला काम छोडकर दूसरा काम करने को कहता है। लोगों के सोये हुए स्वाभिमान को जगाता है। डा. बाबासाहब आंबेडकर जी के प्रेरणा से महाराष्ट्र में महारों ने सफाई काम छोड दिया है। यह बात मुन्ना जानता है। आंबेडकर जी की विचारधारा ही भंगी जाति में प्रगति और परिवर्तन ला सकती है। इसलिए मुन्ना निश्चय करता है कि,"मैं बाबासाहब के कार्यो और विचारों से अपनी बिरादरी को परिचित कराउँगा। उन्हे सच्चाई का ज्ञान कराउँगा।"[६]

पुरानी रूढी और परंपरा सामाजिक कुप्रथाए, कर्मकांड आदि को आंबेडकर ने नकारा है। दलित लोग भी सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध करने लगे है। अस्थि विसर्जन, सत्यनारायण जैसी परंपराओं को न

कार रहे है। सत्यप्रकाश की कहानी 'बिरादरी भोज' मे बुधवा अपने पिता के मरने के बाद बिरादरी भोज नही देना चाहता। वह इस परंपरा का विरोध करता हैं। अपने पिता की म"त्यु के उपरांत चुनी हुई अस्थिओं एवं राख को गंगा में प्रवाहित नहीं करता उसे अपने खेत में बिखेर देता है और सत्यनारायण की

Scanned with CamScanner

पूजा भी नही करना चाहता। बुधवा सत्यनारायण और बिरादरी भोज के लिए चौधरी मलखान सिंह से कर्जा लेता है किंतु सत्यनारायण पूजा और बिरादरी भोज नहीं करता। वह शहर चला जाता है और किर्लोस्कर इंजन खरिद लाता हैं और बचे हुए पैसों से खेत की फसल को पानी देने के लिए बोअरिंग कराने की सोचता है। सभी बिरादरीवालों से अपनी अपनी फसल के लिए पानी लेने के लिए कह देता है। समाज के लोगों को सत्यनारायण के बारे में वह कहता है, "यह बुध्दप्रकाश कथा है। सत्यनारायण कथा से कुछ नही होनेवाला खेतो में खुशहाली से ही बिरादरी मे खुशहाली आयेंगी। म"त्यु पर बिरादरी भोज खिलाने से नहीं। बहुत भोज खिलायें जा चुके। बिरादरी के लिए सिंचाई जल की व्यवस्था ही पिताजी की स्म"ति में मेरी ओर से बिरादरी भोज है।"[७]

गुलाम को गुलामी का एहसास करा दो वह विद्रोह कर उठेगा।इस विचारधारा के अनुसार दलित व्यक्ति को जब तक अपना गुलामी का एहसास नही होता तब तक वह उसके खिलाफ संघर्ष करने के लिए तैयार नही होता है। जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'लाठी' में फग्गन सवर्ण मानसिकतावाले लोगों के अन्याय के विरूध्द विद्रोह करता है। हरिसिंग जब अपने खेतों की सिंचाई के लिए पानी लेने जाता है तब बदनी जाट उसे लाठी से घायल कर देता है। हरिसिंह की वेदना एवं पीडा को देखकर घर के बाकी सदस्य चूप नहीं बैठते। हरिसिंग का लडका फग्गन इसके खिलाफ विद्रोह कर देता है और कहता है कि ,"अभी जा कै साले की लास ना बिछा दूँ तै मेरा नाम फग्गन नही.....लौडा पे लाठी चला दी उसनै....खून पी जाउँगा साले का।"[८]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सपना' समाज में हो रहे जाति पाति के विरूध्द विद्रोह का चित्रण किया हैं। मंदिर प्रवेश की समस्याएँ आज भी जैसी की तैसे है। प्रस्तुत कहानी में नटराजन मंदिर बनाकर पूरा होने के पश्चात बालाजी की प्राणप्रतिष्ठा के दिन गौतम को पंडाल से बाहर बिठाने के लिए ऋषी से कह देते है। गौतम एस सी है और अपने परिवार के साथ वह पंडाल में बैठा है। ऋषी आधुनिक विचारोंवाला समानता माननेवाला युवक है। ऋषी को नटराजन की बात से क्रोध आता है और वह कहता है कि,"मि. नटराजन यह ज्ञान आपको आज ही प्राप्त हुआ है कि गौतम एस सी है, जब वह दिन रात अपना खून पसीना बहा रहा था इस मंदिर को खडा करने में तब नही जानते थे....कि वह एस सी है। तब आपने क्यों नहीं कहा कि ज्यो एस सी है वह मंदिर के काम मे हाथ न बटाएँ। इसके चूने गारे में अपने जिस्म का पसीना न मिलाए क्यों नही ऐलान किया आपने जो ईट किसी एस सी ने बनाई है या पकाई है, ट्रक मे चढाई हैं या उतारी है वो ईट इस मंदिर में नही लगेंगी। उस वक्त भी तो सोचना चाहिए था।"[९]

मोहनदास नैमिशराय की कहानी आवाजें में ठाकूरो की गुलामी के खिलाफ विद्रोह का चित्रण किया गया है। इस कहानी में सभी मेहतर मिलकर अपने पारंपारिक व्यवसाय को नकारतें है। और फैसला करते है कि,"हम झूठन न लेंगें और न ही गंदगी साफ करेंगे।" गंदगी न उठाने के कारण ठाकूरों की बस्ती मे बहुत सारी गंदगी जमा होती है। ठाकूर इतवारी को बुलाने के लिए एक नौकर भेज देता है। नौकर इतवारी के घर जाता है और बता देता है कि तुम्हे ठाकूर ने बुलाया है। इतवारी उसके साथ जाने से मना करता है और उससे कहता है कि,"नई हमें कुछ पता नाहीं, अब कोई किसी की ठकूराहट नही चलती है, सब अपने अपने घर में आजाद हैं। हूँ कह देना अब कोई नई जावैगा भौत दिन हो गये गुलामगीरी करतें करते।"[१०]

हिंदू समाज मे रहते हुए हिंदू रीति रिवाज परंपरा फिर से दलितों को अपनी गिरफ्त में लेने के लिए प्रयासरत है। दलित उनका मोह नही छोड पा रहे है। वे पुनः हिंदूत्व की ओर लौट रहे है। डा. बाबासाहब आंबेडकर ने हिंदू धर्म को त्यागकर बौध्द धर्म का स्वीकार किया था। मोहनदास नैमिशराय की कहानी धर्म

Scanned with CamScanner

परिवर्तन में अरविंद मौर्य अपना धर्म परिवर्तन करना चाहता है। वह अपनी पत्नी निलम से कहता है कि, "मैं हिंदू धर्म से छुटकारा चाहता हू।"[११]

दलित समाज में शिक्षा का महत्व वढ रहा है। लोग अपने वच्चो कों पढा रहे है। मोहनदास नैमिशराय की कहानी आधा सेर घी में वलवंता अपने वेटे धन्नालाल को डिपटी कलक्टर वनाना चाहता है। उसने अपने वेटे की पढाई के लिए खेत वेच दिए थे यहा तक की घर भी गिरवी रखा था। वह चाहता था कि वेटा पढ लिखकर डिपटी कलक्टर वन जाए। साहूकार ने वलवंता को जव समझाया वेटे को पढाने की जिद छोड दे तव वलवंता ने उसे जवाव दिया कि,"साहूकार जी, तुम्हारा काम है सूद लेना और मेरा काम है वेट्टे को डिपटी कलट्टर वनाना। मै भूक्खा रह लूँगा। मजदूरी कर लूँगा, लेकिन वेट्टे को डिपटी कलट्टर जरूर वनाऊँगा।"[१२]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी फूलवा में नायिका फूलवा भी शिक्षा का महत्व जानती है। पति की मौत के बाद भी वह हार नहीं मानती। अकेली मेहनत और मजदूरी करती है। स्वयं अनपढ होकर भी अपने वेटे राधामोहन को एस पी वनाती है। उसके गॉव के जमीदार रामेश्वर सिंह अपने वेटे के लिए काम तलाशने शहर पंडिताइन के पास आते है। पंडिताइन जमीदार रामेश्वर सिंह से कहती है कि तुम जाकर फूलवंती से इस वारे में वात करना। "फूलवंती का राधामोहन कोई छोटा मोटा अफसर नहीं है। एस पी है, एस पी। एक वात वताउँ तुझे जाकर मेमसाव के पॉव पकड ले और तव तक न छोडना जव तक वह हॉ न कह दे।"[१३] पंडिताइन यह वतना भी नहीं भूलती कि उसके वेटे की जिंदगी और नौकरी फूलवा के कारण ही है।

निष्कर्ष:

1. दलित कहानी का प्राण तत्व आंवेडकर की विचारधारा है।
2. दलित कहानी का आंवेडकर के विचारों के वगैर कोई अस्तित्व नहीं है।
3. दलित कहानी में स्वतंत्रता, समानता, न्याय, वंधुता इन मूल्यों को अभिव्यक्त किया गया हैं।
4. दलित कहानी का विद्रोह स्वाभिमान के लिए किया गया विद्रोह हैं।
5. दलित कहानी सामाजिक कुप्रथाए और कर्मकांड आदि को नकारती है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. दलित साहित्य का सौदयशास्त्र-ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन प".क्र. ३०.
2. वहीं प".क्र. ३०.
3. नया ब्राम्हण-सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन प".क्र. २३.
4. वहीं प".क्र. २४.
5. संघर्ष-सुशिला टाकभौरे, ज्योतिलोक प्रकाशन प".क्र. १६.
6. वहीं प".क्र. ४८.
7. विरादरी भोज-सत्यप्रकाश, आकाश पव्लीशर्स ॲन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प".क्र. ११२
8. लाठी-जयप्रकाश कर्दम, विक्रम प्रकाशन प".क्र. ६४.
9. सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाक"ष्ण प्रकाशन प".क्र. २६.
10. आवार्जे--(मोहनदास नैमिशराय चुनी हुई कहानियॉ) मोहनदास नैमिशराय, अनन्य प्रकाशन प".क्र. ८.
11. वहीं प".क्र. ८६.
12. वहीं प".क्र. ३६.
13. फूलवा-दलित कहानी संचयन संपादक-रमणिका गुप्ता, साहित्य अकादमी प्रकाशन प".क्र. १०४.

Scanned with CamScanner